कृतिका (भाग-2)
(LITERATURE)

माता का अँचल

गद्यांश

-शिवपूजन सहाय

प्रस्तुत पाठ 'देहाती दुनिया' उपन्यास का अंश है। आत्मकथात्मक रूप में लिखे गए इस पाठ में ग्रामीण संस्कृति की झाँकी के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न चरित्रों और बच्चों के बचपन के अनेक रंग उकेरे गए हैं। पाठ में भोलानाथ के माध्यम से बच्चों के प्रति माता-पिता के स्नेह, बच्चों के विभिन्न खेलों आदि का वर्णन किया गया है। साथ ही इसमें यह बताया गया है कि बच्चों का जुड़ाव अपनी माँ से अधिक होता है।

Topic Notes

- लेखक परिचय
- पाठ का सारांश
- पाठ संदेश
- कठिन शब्द तथा उनके अर्थ

लेखक परिचय

प्रसिद्ध साहित्यकार शिवपूजन सहाय का जन्म 1893 में उन्नाव गाँव, जिला भोजपुर (बिहार) में हुआ था। इनके बचपन का नाम भोलानाथ था। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के लिए इन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। ये गद्य साहित्य के प्रमुख लेखक हैं। अपनी कृतियों के माध्यम से समाज में व्याप्त विडम्बनाओं, समस्याओं आदि का चित्रण इन्होंने बखूबी किया है। इनकी भाषा सरल और सहज है। इनकी रचनाओं में आँचलिक शब्दों के साथ-साथ तत्सम, तद्भव, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं के शब्दों का समावेश है। इनका निधन 1963 में हुआ था।

पाठ का सारांश

पिता के साथ जुड़ाव

प्रस्तुत पाठ में लेखक शिवपूजन सहाय ने अपने बचपन के खेल-तमाशों, रुचियों और शरारतों का वर्णन किया है। लेखक की माँ वात्सल्य से परिपूर्ण थी और पिता जी उनके हर खेल में बच्चा बनकर शामिल रहते। पाठ अनुसार लेखक का सारा समय अपने पिता के साथ व्यतीत होता था। माँ के साथ उनका केवल दूध पीने तक का नाता था। सुबह नहला-धुलाकर पिताजी उन्हें अपने साथ पूजा में बिठाते थे, उनके माथे पर भभूत लगाते। इससे वह खासा बमभोला लगते इसलिए पिताजी उन्हें प्यार से भोलानाथ कहते थे। पूजापाठ के पश्चात् पिताजी रामनामा बही में राम नाम लिखते। इसके बाद कागज़ा के टुकड़े पर पाँच सौ बार राम नाम लिखकर आटे की गोलियाँ बनाते और अपने पुत्र को कंधे पर बिठाकर गंगा नदी के किनारे ले जाते। वहाँ पर वे मछलियों को आटे की गोलियाँ खिलाते। लौटते समय उसे पेड़ की डालियों पर झूला झुलाते। कभी-कभी उनके साथ झूठमूठ की कुश्ती लड़ते। जानबूझकर कुश्ती हार जाते। ऐसा करके वे उनका आत्मविश्वास बढ़ाते।

माँ का भोलानाथ से लगाव

लेखक के पिताजी उसे अपने हाथों से खाना खिलाते। पेट भर जाने पर भी लेखक की माँ को तृप्ति नहीं होती थी और वे दही-भात सानकर अपने हाथों से उसे चिड़ियों के नाम से कौर बनाकर खिलाती थीं। संतुष्टि होने पर वे उसे खेलने जाने देती थीं। खेलते-खेलते उसे घर के अन्दर लाकर उसके सिर में कड़वा तेल लगाकर उसकी चोटी बनाकर उसे फूलदार कुरता पहना देती थीं। इस बीच बालक रोता ही रहता था। फिर पिताजी उसे गोद में उठाकर जैसे ही बाहर लाते, वह सिसकना भूलकर अपने मित्रों के साथ खेलने निकल जाता।

उदाहरण 1. **आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है? [NCERT]**

उत्तर : पल में हँसना और पल में रोना बच्चे का स्वभाव होता है। इसी प्रकार हर बच्चा अपने हमउम्र दोस्तों के साथ ही खेलना चाहता है। भोलानाथ भी अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में अधिक रुचि लेता है। अपने मित्रों को हँसते खेलते देखकर वह खुद को रोक नहीं पाता और अपनी मित्र-मंडली में जाकर वह रोना भूल जाता है। इसका अन्य कारण यह भी हो सकता है कि यदि वह अपने मित्रों के सामने रोएगा तो उसके मित्र उसका मजाक बनाएँगे इसलिए वह सिसकना भूल जाता है।

एहतियात

➥ *सामान्य तौर पर विद्यार्थी यहाँ केवल पाठ के आधार पर उत्तर देते हैं। इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थियों को अपनी विचारात्मक क्षमता के आधार पर सोच-समझकर लिखना चाहिए।*

बच्चों के खेल व पिताजी का उसमें शामिल होना

भोलानाथ और उसके साथी घर में उपलब्ध वस्तुओं से ही खेल खेला करते थे। घर के बाहर का चबूतरा उनका खेल का मैदान बन जाता था। कागज़ा का टेंट लगाते, मिट्टी के ढेलों के लड्डू बनाते, पत्तों की पूड़ी-कचौड़ी, गीली मिट्टी की जलेबी बनाते। फूटे घड़े के बताशे और जस्ते के ठीकरों के पैसे बनाते। पानी, धूल आदि से ज्योनार तैयार की जाती। बारात निकाली जाती। कनस्तर का तम्बूरा बजता। कभी-कभी खेती करने का नाटक किया जाता, बीज बोते, फ़सल पकने पर उसे तोड़कर बेचने का नाटक करते। जैसे ही पिताजी इन सब खेलों में शामिल होते, वैसे ही बच्चे शर्माकर भाग जाते।

उदाहरण 2. **भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है? [NCERT]**

उत्तर : भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री हमारे खेल और खेलने की सामग्री से पूरी तरह भिन्न है। जहाँ उनके खेल और खिलौने घर की अनावश्यक वस्तुएँ होती थीं, वहीं हमारे खिलौने अत्याधुनिक और बैटरी चालित होते हैं। जस्ते के टुकड़े, फूटे हुए घड़े, कनस्तर, चूहेदानी और पेड़ों के पत्ते आदि से खिलौने बनाकर उनसे खेलकर ही वे संतुष्ट हो जाते थे। हम मोबाइल, कंप्यूटर, वीडियो गेम आदि से खेलते हैं। उनके खिलौने हस्तनिर्मित होते थे और हमारे खिलौने बाज़ार निर्मित होते हैं।

एहतियात

➥ *इस प्रश्न का उत्तर देते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि लेखक के समय में प्रचलित और वर्तमान में प्रचलित खेल-सामग्री का विवरण देते हुए उत्तर लिखा जाए।*

मूसन तिवारी को चिढ़ाना और साँप से डरना

मूसन तिवारी को चिढ़ाने पर गुरूजी से सबको डाँट पड़ती है। रोते हुए भोलानाथ अपने पिताजी के साथ घर जा रहे होते हैं पर अपने मित्रों को देखकर उनके साथ चले जाते हैं। खेतों में जाकर चिड़ियों को उड़ाते हैं और खुश होते हैं। एक टीले पर चूहों के बिल में पानी उलीचने लगते हैं और जब चूहे बाहर आते हैं तो बड़े ही खुश होते हैं। ऐसे ही एक बिल में से चूहे के स्थान पर साँप बाहर निकल आता है। उसे देखकर सब बच्चे डरकर सरपट भागने लगते हैं। बिना कुछ सोचे-समझे, गिरते-पड़ते बस भागते जाते हैं। कोई उल्टा होकर गिरता है, किसी का सिर फूट जाता है तो किसी के दाँत। सारी देह लहूलुहान हो जाती है, किसी-किसी के तलवों में से खून निकलने लगता है पर भागने की गति में कमी नहीं आती। भोलानाथ बदहवास-सा भागता हुआ घर में घुसता है। पिताजी की तरफ कोई ध्यान नहीं देता। सीधे माँ की गोद में जाकर उनके आँचल में छिप जाता है। बहुत पूछने पर भी मुँह से बोल नहीं निकलते। माँ घबरा जाती है और उसे अपने आँचल में छिपा लेती है। पिताजी के हाथ बढ़ाने पर भी वह माँ के आँचल को नहीं छोड़ता।

उदाहरण 3. **प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है? [NCERT]**

उत्तर : बच्चे का अपनी माँ से ममता का रिश्ता होता है और पिता से लगाव का। लेखक अपने पिता के संपर्क में अधिक रहता था इसलिए उसका पिता से अधिक लगाव था। उसकी माँ भी उसे बेहद प्रेम करती थी। इस बात का पता इससे चलता है कि वह उसे ज़बरदस्ती खाना खिलाती थी, उसके बालों में तेल लगाकर उसे कपड़े पहनाती थी ।

विपदा के समय भोलानाथ अपने पिता के पास न जाकर अपनी माँ के पास जाता है क्योंकि उस समय उसे जिस स्नेह और ममता की आवश्यकता थी उसकी प्राप्ति माँ के आँचल में ही हो सकती थी। इसलिए उस समय उसने माँ के आँचल की शरण ली। उसे आँचल की छाँव से अधिक सुरक्षित कोई अन्य स्थान नज़र नहीं आया।

पाठ संदेश

(1) पाठ का मूल सन्देश यह बताना है कि छोटा बच्चा चाहे किसी के भी संपर्क में रहे पर विपत्ति के समय उसे अपनी माँ की गोद ही सुरक्षित लगती है।

(2) एक पिता अपने बच्चे को पूर्ण आत्मविश्वासी बनाता है। पाठ में हमने देखा कि किस प्रकार भोलानाथ के पिता कुश्ती में उससे जानबूझकर हार जाते हैं। ऐसा करके वह उसमें आत्मविश्वास और उत्साह जगाते हैं।

(3) पाठ का एक सन्देश यह भी है कि बच्चों को अकारण किसी को सताना नहीं चाहिए और जीवों पर दया करनी चाहिए।

कठिन शब्द तथा उनके अर्थ

पृष्ठ संख्या	शब्द	अर्थ
1	*खरचे*	व्यय
	अँचल	आँचल
	तड़के	सवेरे
	लिलार	ललाट
	त्रिपुंड	माथे पर लगाए जाने वाला तीन आड़ी रेखाओं का तिलक
	पोथी	धार्मिक ग्रन्थ
3	*शिथिल*	ढीला
	उतान	पीठ के बल लेटना
	गोरस	दूध
	ठौर	स्थान
	मददुए	आदमी
	महतारी	माँ

पृष्ठ संख्या	शब्द	अर्थ
4	*काठ*	लकड़ी
	सरकंडा	नुकीली घास
	कड़वा तेल	सरसों का तेल
	बाट जोहना	प्रतीक्षा करना
	चन्दोआ	छोटा शामियाना
	ज्योनार	दावत
	आचमनी	पीने के काम आने वाला चम्मच जैसा बर्तन
	जीमने	भोजन करना
5	*तंबूरा*	एक वाद्ययंत्र
	ओहार	परदे के लिए डाला गया कपड़ा
	अमोले	आम का उगता हुआ पौधा

पृष्ठ संख्या	शब्द	अर्थ
5	*कसोरे*	मिट्टी का बना छिछला बर्तन
	बटोही	पथिक
6	*रहरी*	अरहर
	अंठई	कुत्ते के शरीर में चिपके रहने वाले छोटे कीड़े

पृष्ठ संख्या	शब्द	अर्थ
6	*चिरौरी*	विनती
7	*अलापना*	बोलना
	परायी पीर	दूसरों का दुख
	छलनी होना	छिल जाना
8	*ओसारा*	बरामदा
	अमनिया	साफ
	कुहराम मचाना	शोर मचाना

वर्णनात्मक प्रश्न

[2-3 अंक]

(30 — 40 / 50 — 60 शब्द)

1. बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं? अपने जीवन से संबंधित कोई घटना लिखिए जिसमें आपने अपने माता-पिता के प्रति प्रेम को अभिव्यक्त किया हो? [CBSE 2017]

उत्तर : बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को विभिन्न प्रकार से व्यक्त करते हैं। माता-पिता से ज़िद्द करना, प्रेमपूर्वक उनकी गोद में बैठकर उनके हाथ से खाना खाने के लिए ज़िद्द करना, पैदल चलते हुए उनकी गोद में आने की ज़िद्द करना, उन्हें अपने साथ खेलने के लिए कहना आदि ऐसी क्रियाएँ हैं जिनके द्वारा बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करते हैं।

पिछले माह मेरे माता-पिता किसी आवश्यक कार्य से बाहर गए थे। उन्हें शाम को घर आना था। उनकी अनुपस्थिति में मैंने शाम के खाने की पूरी तैयारी की। मैं जानती थी कि मेरे माता-पिता काफी थके हुए होंगे इसलिए उनके आने से पहले ही मैंने अपने माता-पिता के लिए खाना तैयार कर दिया। जब वे घर आए और उन्होंने ये सब देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा और उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

2. 'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है? [CBSE 2016]

उत्तर : इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह हमारे बचपन की दुनिया से सर्वथा भिन्न है। जहाँ पहले बच्चों का बचपन सहज और सरल होता था वहीं आज का बचपन कृत्रिमता से युक्त है। पहले के बच्चों में पढ़ाई के लिए किसी भी प्रकार का दबाव नहीं था। वे दिनभर मस्त होकर खेलते-कूदते रहते थे। घर की अनावश्यक वस्तुएँ उनके खिलौने बन जाते थे। उन्हीं से उनका मन बहल जाता था। शाम को खेतों में जाकर उछल-कूद करते थे। हमारा बचपन इससे सर्वथा भिन्न है। शहरी माहौल में रहते हुए हम पूरी तरह से शहरी हो गए हैं। प्राकृतिक वातावरण से हम कोसों दूर हैं। आज हमारे खिलौने मोबाइल, टीवी, कंप्यूटर आदि हैं। घर पर ही इन सबसे खेलते हुए हमारा बचपन बीत रहा है। आज का बचपन कहीं ठहर-सा गया है।

3. 'माता का अँचल' पाठ में लेखक के बचपन की कैसी तस्वीर उभरती है? [CBSE 2015]

उत्तर : पाठ में लेखक के बचपन की अत्यंत ही मनोहारी झाँकी प्रस्तुत की गई है। लेखक ने बताया है कि वे अपनी माता-पिता की आँखों के तारे थे। उनके पिता अपना अधिकांश समय उनके साथ ही बिताया करते थे। पिता जी उनके साथ मित्रवत व्यवहार करते थे। उनको नहलाने-धुलाने से लेकर खाना खिलाने तक का सारा कार्य पिताजी ही करते थे। माता भी अपना लाड़-प्यार दिखाने का कोई अवसर नहीं जाने देती थी। भोलानाथ को ज़बरदस्ती चिड़ियों के नाम के कौर बनाकर खिलाती थीं। ज़बरदस्ती पकड़कर उनके सिर पर कड़वा तेल लगाकर उनकी चोटी बनाती थी और फूलदार कुरता पहना देती थीं। लेखक का बचपन अपने मित्रों के साथ खेलते-कूदते, तनावरहित, शरारतें करते, मनोविनोद करते बीता। उन्होंने अपने बचपन को भरपूर जिया।

4. बच्चे के पिता बच्चों के खेल में क्यों आ जाते थे? उनके आने पर बच्चे खेल छोड़कर क्यों भाग खड़े होते थे? [CBSE 2014]

उत्तर : बच्चे का अपने पिता से अधिक लगाव था। उसके पिता का अधिकांश समय उसके साथ ही बीतता था। वे उसके हर खेल को बड़ी ही रुचि और स्नेह से देखते थे। खेल जैसे ही समाप्त होने लगता वैसे ही वे अचानक प्रकट होकर खेल में शामिल हो जाते। ताकि उनके बच्चे का मनोरंजन

जारी रह सके। अपने बच्चे से अधिक लगाव होने के कारण वे ऐसा करते।

उनके आने पर बच्चे खेल छोड़कर भाग खड़े होते क्योंकि वे उनके सामने सहज होकर नहीं खेल पाते थे। इसका अन्य कारण यह भी हो सकता है कि वे अपने मित्रों के साथ पूरी मस्ती से खेलना चाहते थे, किसी बड़े के आने पर वे खुद को असहज महसूस करने लगते थे।

5. पाठ में बच्चे बारात का जुलूस कैसे निकालते थे? [CBSE 2013]

उत्तर : पाठ में बच्चे बारात का जुलूस बड़े ही रोचक अंदाज़ में निकालते थे। घर की चूहेदानी पालकी बन जाती। उस पर लाल कपड़ा डालकर उसका पर्दा बना दिया जाता। बकरे पर दूल्हे को बैठाकर घर के बाहर के चबूतरे पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक बारात निकाली जाती। लेखक और उनके मित्र ही बाराती बन जाते और वे ही घराती बन जाते। इस प्रकार कनस्तर का बाजा बजाते हुए बड़े ही शान से बारात निकाली जाती।

6. 'माता का अँचल' पाठ में माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य प्रकट हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए। [CBSE 2012]

उत्तर : पाठ में माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य प्रकट हुआ है, वह वास्तव में हृदयग्राही है। बालक को सवेरे उठाकर नहला-धुलाकर अपने साथ पूजा में बिठाना, कंधे पर बिठाकर गंगा तक ले जाना, पेड़ की डालियों पर झूला झुलाना, पिता का साथ में कुश्ती लड़ना आदि दृश्य बड़े ही मनोहारी हैं। ये दृश्य हमें अपने बचपन में ले जाते हैं। इसी प्रकार माँ द्वारा जबरदस्ती खाना खिलाना, नज़र से बचाने के लिए काली बिंदी लगाना, शिशु का शृंगार करना, चोट लगने पर हल्दी पीसकर लगाना आदि दृश्य हमें अपने माता-पिता के वात्सल्यपूर्ण व्यवहार का स्मरण कराते हैं।

7. 'माता का अँचल' पाठ में ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया गया है? आप ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन में क्या अंतर पाते हैं?

8. भोलानाथ तथा उसके साथियों के खेल की सामग्री कैसी थी? वे कौन-कौन से खेल खेलते थे? [Diksha]

उत्तर : भोलानाथ और उसके साथियों के खेल की सामग्री प्राकृतिक और घर में प्रयोग होने वाली अनुपयुक्त वस्तुएँ थीं। उनके खेल, तमाशे और नाटक की सभी सामग्रियाँ बच्चों द्वारा स्वयं निर्मित थीं। घर की अनुपयोगी वस्तुएँ ही उनके खेल की सामग्री बन जाती थीं, जिनसे किसी प्रकार की हानि होने की संभावना नहीं थी। जिन्हें खरीदने के लिए पैसे खर्च करने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। धूल-मिट्टी से खेलने में पूर्ण आनंद की अनुभूति होती थी। न कोई रोक, न कोई डर, न किसी का निर्देशन। वे मिट्टी के घरौंदे बनाते, खेती करते, दुकान लगाते और बारात निकालते। इस प्रकार के खेल उनकी सामूहिक बुद्धि की उपज होते थे।

9. भोलानाथ और उसके साथी खेल-खेल में दावत की योजना किस तरह बनाते थे?

उत्तर : भोलानाथ और उसके साथी खेलते-खेलते भोजन बनाने की योजना बना लेते। फिर वे सब भोजन बनाने की प्रक्रिया में जुट जाते। घड़े के मुँह का चूल्हा व दीए (दीपक के पात्र) की कड़ाही और पूजा की आचमनी की कलछी बनाते। वे पानी को घी, धूल को आटा, बालू को चीनी बनाकर भोजन बनाते तथा सभी भोजन के लिए पंगत में बैठ जाते। जब वे सब भोजन खाने का उपक्रम करते तो बाबू जी भी आकर पंगत के अंत में बैठ जाते। उनको देखते ही बच्चे हँसते-खिलखिलाते हुए भाग जाते।

10. भोलानाथ और उसके साथी फसल उगाने का खेल कैसे खेलते थे?

उत्तर : खेलते-खेलते भोलानाथ और उसके साथी खेती करने और फसल उगाने की योजना बनाते । चबूतरे के छोर पर घिरनी गाड़कर बाल्टी को कुआँ बना लेते। मूँज की पतली रस्सी से चुक्कड़ बाँधकर गरारी पर चढ़ाकर लटका दिया जाता। दो लड़के बैलों की भाँति मोट खींचने लगते। चबूतरा, खेत, कंकड़, बीज बनता और वे खेती करते। फसल तैयार होने में देर न लगती। वे जल्दी से फसल काटकर पैरों से रौंदकर ओसाई कर लेते।

11. 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर बताइए कि माँ अपने बच्चे को किस प्रकार 'कन्हैया' का रूप देती थी?

उत्तर : भोलानाथ जब खाना खाने के बाद अपने साथियों के साथ गली में खेल रहा होता तभी उसकी माँ उसे जबरदस्ती पकड़ लेती और भोलानाथ के लाख ना-नुकर करने पर भी चुल्लूभर कड़वा तेल सिर पर डालकर सराबोर कर देती। उसकी नाभी और ललाट पर काजल की बिंदी लगा देती। बालों में चोटी गूँथकर उसमें फूलदार लट्टू बाँधती और रंगीन कुरता-टोपी पहनाकर 'कन्हैया' बना देती थी।

12. पाठ में आए हुए उन प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों।

उत्तर : पाठ का सबसे रोमांचक प्रसंग वह है जब एक साँप सब बच्चों के पीछे पड़ जाता है। तब वे बच्चे किस प्रकार गिरते-पड़ते भागते हैं और माँ की गोद में छिपकर सहारा लेते हैं, यह प्रसंग पाठक के हृदय को भीतर तक हिला देता है।। इस पाठ में गुदगुदाने वाले प्रसंग भी अनेक हैं। विशेष

रूप से बच्चे के पिता का मित्रतापूर्वक बच्चों के खेल में शामिल होना मन को छू लेता है। जैसे ही बच्चे भोज, शादी या खेती का खेल खेलते हैं, बच्चे का पिता बच्चा बनकर उनमें शामिल हो जाता है। पिता का इस प्रकार बच्चा बन जाना बहुत सुखद अनुभव है जो सभी पाठकों को गुदगुदा देता है।

13. भोलानाथ के पिता की दिनचर्या का वर्णन करते हुए पाठ में निहित सन्देश स्पष्ट कीजिए।

14. मूसन तिवारी द्वारा बाल मंडली की शिकायत के बाद पाठशाला में भोलानाथ के साथ कैसा व्यवहार हुआ और उन्हें उनके पिता जी के द्वारा किस प्रकार घर लाया गया?

उत्तर : मूसन तिवारी द्वारा बाल मंडली की शिकायत के बाद मास्टर जी ने पाठशाला से चार लड़कों को भेजकर उन्हें पकड़कर लाने को कहा। बाकी बच्चे तो भाग गए पर भोलानाथ को पकड़ लिया गया और मास्टर जी के पास लाया गया। मास्टर जी ने उसकी खूब खबर ली और उसे घर नहीं जाने दिया। जब बाबूजी के पास यह खबर पहुँची तब वे दौड़े-दौड़े पाठशाला पहुँचे। भोलानाथ का रो-रोकर बुरा हाल था। पिता जी को देखते ही वह उनकी गोद में चला गया। उसे पुचकारकर उन्होंने मास्टर जी से भोलानाथ को छोड़ने की विनती की। मास्टर जी ने दोबारा ऐसी गलती न करने की हिदायत देकर उसे छोड़ दिया और पिताजी के साथ वह अपने घर आ गया।

15. 'माता का अँचल' शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर : पाठ का शीर्षक 'माता का अँचल' सर्वथा उपयुक्त है। अपना अधिकांश समय पिता के साथ बिताने पर भी बालक भोलानाथ पर जब संकट आता है, पिता की पुकार का उस पर कोई असर नहीं होता क्योंकि उस समय उसे जिस शांति और सुरक्षा की आवश्यकता थी, वह माँ के आँचल के अतिरिक्त कहीं नहीं मिल सकती थी। इसका अन्य शीर्षक 'बचपन के दिन' भी हो सकता है।

16. साँप को देखते ही बच्चों ने क्या किया?

उत्तर : एक बार जब बच्चे चूहों के बिल में पानी डाल रहे थे तब उसमें से चूहे के स्थान पर साँप निकल आया। उसे देखकर बच्चे डर गए। वे रोते-चिल्लाते बेतहाशा भागे। कोई सीधा गिरा तो कोई औंधा। किसी का सिर फूट गया, किसी के दाँत टूट गए, तो कोई झाड़ियों के काँटों में उलझकर गिर गया। लेखक का शरीर भी जगह-जगह से लहूलुहान हो गया था। वह एक साँस में ही भागते हुए सीधे घर में घुस गया और अपनी माँ की गोद में शरण लेकर ही रुका।

17. भोलानाथ की माँ कब संतुष्ट होती थी?

उत्तर : माँ को बाबूजी के खिलाने का ढंग इसलिए पसंद नहीं था क्योंकि वह चार-चार दाने के कौर भोलानाथ के मुँह में देते थे, इससे भोलानाथ को लगता था कि उसने बहुत खा लिया है और उसका पेट भर गया है। माँ उसे मुँह भर भरकर खिलाती थी। वह थाली में दही-भात सानती और तरह-तरह के पक्षियों के बनावटी नामों के कौर बना-बनाकर उसे खिलाती जाती थी। ऐसा करने पर ही माँ संतुष्ट होती थी।

18. मूसन तिवारी कौन था? उसे किसने चिढ़ाया और दंड किसे मिला?

उत्तर : मूसन तिवारी गाँव के ही एक बुजुर्ग व्यक्ति थे। उन्हें कम दिखाई देता था और वे सीधे नहीं चल पाते थे। बैजू सबसे शैतान था। उसने मूसन तिवारी को चिढ़ाना शुरू किया, 'बुढ़वा बेईमान माँगे करैला का चोखा।' सभी बच्चों ने बैजू के सुर में सुर मिलाकर मूसन तिवारी को चिढ़ाना शुरू कर दिया। जब मूसन तिवारी उनको मारने को दौड़े तो बच्चे भाग गए। वे जब उनकी शिकायत लेकर उनके अध्यापक के पास पहुँचे तो उन्होंने दो लड़कों को भोलानाथ के घर भेजकर उसे पकड़वा लिया। गलती तो यहाँ बैजू की थी पर सजा भोलानाथ को भुगतनी पड़ी।

19. भोलानाथ को उसके पिताजी अपने साथ पूजा में क्यों बिठाते थे?

उत्तर : भोलानाथ के पिताजी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजा करना, रामायण पढ़ना, राम नाम लिखना उनके नियम थे। वे चाहते थे कि भोलानाथ में भी बचपन से ही अच्छे संस्कारों की नींव पड़े इसलिए वे उसे सुबह नहला-धुलाकर अपने साथ पूजा में बिठाते। हर पिता चाहता है कि उसका बच्चा बचपन से ही ईश्वर के प्रति आस्था रखे। भोलानाथ के पिता भी यही चाहते थे कि उनके बच्चे में भी बचपन से ही ऐसे संस्कार जन्म लें।

20. 'माता का अँचल' पाठ में जिस तत्कालीन पारिवारिक और सामाजिक परिवेश का चित्रण किया गया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

21. मूसन तिवारी का बैजू और उसके साथियों द्वारा मजाक उड़ाने की घटना से आप क्या शिक्षा ग्रहण करते हैं?